जियो मगर प्रेम से

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

इस ब्रहमाण्ड में चौरासी लाख जीव यौनियों की व्यवस्था है। यह ब्रहमाण्ड जीवों का उत्पत्ति स्थान है। सभी जीना चाहते हैं मरना कोई नहीं चाहता, सभी सुख चाहते हैं दुःख कोई नहीं चाहता। दुःख और सुख कर्मों के परिणाम हैं। वर्तमान जीवन में जो कुछ भी सुख–दुःख मिल रहा है वह हमारे पूर्वजन्मों के कर्मों और इस जन्म के कृत कर्मों का परिणाम है। हम चाहें या नहीं चाहें वह प्राप्त होगा ही। आयुष्य कर्म के साथ रिटर्न टिकट भी निश्चित रहता है। जो कुछ भी कार्य किया है उसका भुगतान करना पड़ता है। शरीर भोगायतन है। आत्म प्रदेश में भी भोग क्रिया चलती रहती है। कर्म सबका पीछा किये रहता है। भगवान राम को 14 वर्ष का बनवास भोगना पड़ा। राजा हरिशचन्द्र को चण्डाल के घर नौकरी करनी पड़ी। यह कर्मों के कारण हुआ। जीवन नदी के दो तटों की भांति है। जीवन और मृत्यु नदी के दो छोर हैं। उन दोनों छोरों के बीच जैसे जल प्रवाहित होता रहता है वैसे ही जीवन भी आयुष्य कर्म के अनुसार चलता रहता है। मानव को मध्यस्थ भाव से जीवन जीना चाहिए। परिवार में प्रिय का वियोग और अप्रिय का संयोग दुःखदायी होता है। जिसने समय के लिए जिसका आयुष्य है उससे एक भी दिन न तो घट सकता है ओर न बढ़ सकता है। आत्म तुला के सिद्धान्त को ध्यान में रखकर जीवन यापन करना चाहिए। किसी में आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। प्रेम से जीवन यापन करना चाहिए। प्रेम एक संजीवनी है यह संजीवनी जिसके पास है वह दुःखी नहीं होता। इसलिए प्रेम से स्वयं जियो और दूसरों को भी प्रेम से जीने की प्रेरणा देनी चाहिए। प्रेम में कोई अप्रेक्षा नहीं रखनी चाहिए–

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ पण्डित भया न कोय,

ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय।

अर्थात पुस्तकों का खूब अध्ययन कर लें, खूब अधिक ज्ञान प्राप्त कर लें, किन्तु यदि प्रेम का पाठ जीवन में नहीं पढ़ा तो सभी ज्ञान किसी काम का नहीं है। प्रेम का रसायन जिसके पास

है वह पूजनीय है। घृणा और प्रेम एक–दूसरे के विरोधी हैं। हृदय में जब प्रेम का स्रोत प्रवाहित होता है तो सभी मनोमालिन्य धूल जाता है। प्रेम आत्मा का गुण है। आत्मा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन और अनन्त सुख का धाम है। सुख बाहरी वस्तु में नहीं है, सुख आत्मा में हैं। आत्मा में सुख का खजाना है। बाहर के पदार्थ जड़ हैं, जड़ में सुख नहीं है। जड़ पदार्थ नाशवान हैं। जो स्वयं नाशवान है वह दूसरों को कैसे सुख और प्रेम दे सकता है? सभी शास्त्रों में आत्मा को ही सुख का खजाना बताया गया है। प्रेम से कही गयी बात दूसरों के दिल को छू जाती है। दूसरों का हृदय परिवर्तित हो जाता है। घृणा को प्रेम से जितने का प्रयास करना चाहिए। विश्व तरंगों से भरा पड़ा है। प्रेम की तरंगे ऐसी है जो सभी प्राणियों को प्रिय लगती है। प्रेम हिंसक को अहिंसक बना देता है। पशु–पक्षी भी प्रेम की भाषा को समझते हैं। यदि कोई व्यक्ति क्रोध से बात कहता है तो सामने वालों को भी क्रोध आ सकता है। किन्तु यदि वही व्यक्ति प्रेम से किसी को कुछ समझाता है तो बुरा आदमी भी उसकी बात मान लेता है। प्रेम में आकर्षण होता है। यह दूसरों को अपनी और खींच लेता है। प्रेम जीवित प्राणियों में पैदा होता है। प्रेम भाईचारा और विश्वबंधुत्व को बढ़ाता है। एक देश दूसरे देश के साथ मित्रता तभी करता है जब दोनों में स्वाभाविक प्रेम हो। स्वार्थ के आधार पर किया गया प्रेम अधिक दिनों तक नहीं टिक सकता। उत्सव, पर्व और महोत्सव सभी धर्मों में प्रेम उत्पन्न करते हैं। चाहे किसी भी धर्म के उत्सव हों उस उत्सव पर मानव मात्र के प्रति प्रेम दिखलाना चाहिए। सभी साथ मिलकर उत्सव को मनायें इससे प्रेम बढ़ता है। भारतीय संस्कृति में सभी प्राणियों के प्रति सुख की कामना की गयी है। वहां कहा गया है कि सभी सुखी होवें, सभी निरोग होवें, सभी एक–दूसरे से प्रेम करें। कोई किसी से द्वेष न करें।

जिस व्यक्ति में लघुता होती है, जिस व्यक्ति में विनम्रता होती है, जिस व्यक्ति में निरहंकारता होती है, उस व्यक्ति का सामाजिक विकास सांस्कृतिक विकास बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति सहनशील और दूसरों को सम्मान देने वाला होता है। किन्तु जिस व्यक्ति में अहंकार होता है उसका धीरे–धीरे पतन हो जाता है। भगवान् श्रीरामचन्द्र और लंकापति रावण का दृष्टान्त इस संबंध में विचारणीय है। जब भगवान् राम और रावण की सेनाएं आमने–सामने आकर खड़ी हुई तो भगवान् राम पैदल, बिना अस्त्र–शस्त्र के भालू–बन्दरों की सेना के साथ

खड़े थे। दूसरी तरफ रावण रथ पर सवार और चतुरंगड़ी सेना के साथ अहंकार से युक्त युद्ध क्षेत्र में भगवान् राम को ललकार रहा था। यह युद्ध लघुता और प्रभुता का युद्ध था, जिसमें लघुता विजयी हुई और प्रभुता पराजित। लघुता का गुण शिक्षा, विद्या और दूसरों को सम्मान देने से प्राप्त होता है। विद्या को प्राप्त करने के बाद भी यदि लघुता नहीं आई तो समझना चाहिए कि विद्या का वास्तविक मूल्य अभी नहीं प्राप्त हुआ। जिस समय वृक्ष में फल आता है तो वृक्ष की शाखाएं नम जाती है। इसी प्रकार विद्या और विनय से सम्पन्न व्यक्ति नम्र बन जाता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे हैं कि विद्या की प्राप्ति के बाद भी उनमें नम्रता न आकर अहंकार आ जाता है और यह अहंकार उनके विनाश का कारण होता है।